P: ISSN NO.: 2394-0344
E: ISSN NO.: 2455-0817
Remarking
Vol-III * Issue- I* June- 2016

हिन्दी लेखिकाओं की कहानियों में परम्परा के विरोध में नारी

मोनिका जसरोटिया
शोध छात्रा,
हिन्दी विभाग,
यूनिर्वसिटी आफ जम्मू,
जम्मू और कश्मीर

सारांश

आदिग्रन्थ से लेकर आज तक साहित्य का केन्द्र बिन्दु नारी ही रही है। आज वे अपने स्वत्व की पहचान करती हुई अपने अधिकार और दायित्व से भली भांति परिचित होकर अपने होने का अर्थ तला"ा कर रही है। यह बात पितृस्तात्मक सत्ता को नागवार लग सकती है क्योंकि उसे पुरूष वर्ग ने अब तक भोग्या, वस्तु, दासी या गुलाम में ही देखा परखा है। सामाजिक जीवन में दोनों की अवस्था असमान और असंतुलित ह। नारी के संदर्भ में निम्नलिखित विचार परम्परा से निकलकर आए हैं : चाणक्य के अनुसार, ''पति ही नारी का सबसे बड़ा देवता है, उसकी सेवा करना उसका एकमात्र कर्तव्य है।'' पति की अवज्ञा करने वाली नारी कलुषित मनोवृति की कही जाती है। भारतीय परम्परा में पति को प्रसन्न रखना स्त्री का कर्तव्य है अगर पति उसकी किसी बात से अप्रसन्न हो जाता है तो वह सजा की पात्र है असली औरत वह है जो पुरूष की बात माने, समाज ऐसी ही औरत को स्वीकृति देता है और उसका सम्मान करता है। नारी तब तक नारी है जब तक वह पुरूष की संपति है पति से अलग उसका अपना कोई व्यक्तित्व नहीं है। पुरूष प्रधान समाज में नारी का शोषण युगों से होता रहा है। स्वतन्त्रता के बाद नारी में नई चेतना का विकास हुआ है । स्वतंत्र भारत के संविधान में नारी को भंरपूर संरक्षण मिला है, उसे पुरूष के समान जीवन यापन करने का संपूर्ण अधिकार मिला है। प्राचीन काल से लेकर आज तक जो महिलाएँ समाज में अन्याय और अत्याचार सह रही थीं, उनमें से अनेक महिलाओं ने इन अत्याचारों के प्रति विद्रोह किया । आज नारी परम्परागत मान्यताओं के विरोध में खड़ी है और उसका विद्रोही रूप उभरने लगा है। आज वह अपने साथ हुए अमानवीय व्यवहार को सहन नहीं करती बल्कि उसके विरूद्ध आवाज उठाती है। हिन्दी कहानियों में कहानीकारों ने अनेक नए क्षितिजों को छुआ है और कहानियों में नारी के प्रति हो रहे अत्याचार, पुरानी रूढ़ियों, परम्पराओं के विरूद्ध नारी को आवाज़ उठाते दिखाया है। लेखिकाआ ने कहानियों में भारतीय समाज की जड़–परम्पराओं का विरोध किया है जिनसे नारियों का विकास अवरूद्ध होता है। कहानियों में नारियाँ एक नई चेतना को लेकर जागृत हुई हैं और अपने प्रति हो रहे शोषण के प्रति विद्रोह करती दिखायी गई हैं।

मुख्य शब्दः परम्परागत मान्यताएं, विद्रोह, रूढ़ियाँ, मनोवृति, मानसिकता, संतुलित, स्वव्यक्तित्व, संस्कारहीन, सत्ताधारी।

प्रस्तावना

हिन्दी कहानी लेखन सहजता और गंभीरता से नारी की तकलीफों विवादों और व्यथाओं को व्यक्त कर रहा है। कहानियों में नारी चेतना के द्वारा महिलाओं के इतिहास और संस्कृति को पुनः वि"लेषित किया जा रहा है। हिंदी महिला कहानी कार भी इस क्षेत्र में पीछे नहीं हैं। उन्होंने भी नारी की सांस्कृतिक, ऐतिहासिक और सामाजिक तिलिस्म को तोड़ कर महिलाओं में चेतना जगाने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की है। कहानी लेखन में स्त्री चेतना का विकास कहानी लेखन के आरंभ से ही देखा जा सकता है। आज नारी किसी भी क्षेत्र में पीछे नहीं है। पितृसत्ता की सडो गली परम्पराओं और रूढ़ियों को तोड़ कर पुरूष के साथ कंधे से कंधा मिला कर चल रही है। महिलाओं के प्रति हो रहे अत्याचार का डट कर विरोध कर रही है। सदियों स हो रहे शोषण के निरूद्ध नारी के साहित्य में भी अपनी उपस्थिति दर्ज कराई है।

अध्ययन का उद्धेश्य

इस अध्ययन में हम इस बात को बताने कि को"ा"ा है कि भारतीय समाज में परम्परा से चली आ रही रूढ़िवादिता तथा पुरुष मानसिकता के विरोध में नारी आज अपने अस्तित्व के लिए किस प्रकार जागरूक हो चुकी है? इसके

अतिरिक्त इस अध्ययन में यह भी प्रयास रहेगा कि क्या आज की नारी पति के व्यक्तित्व मे पूर्ण विलीन नही होना चाहती है? और क्या वह इसके लिए निरन्तर पुरूष प्रधान समाज में अपना स्थान बनाने के लिए संघर्षरत है? इसके अतिरिक्त भारतीय नारी का रूढ़िवाद और पुरूष सत्तात्मक समाज के खिलाफ निरन्तर विरो़द्ध पर भी प्रका"ा डाला जाएगा।

विश्लेषण

लेखिका कुसुम अंसल की 'मेरे आ"ाक का नाम' कहानी में उपमा अपने शक्की और अन्याय करने वाले पति के प्रति केवल विद्रोह ही नहीं करती बल्कि पति हेमंत के थप्पड़ का प्रतिकार वह थप्पड़ से करती है। उसका पति उस पर बदचलन होने का झूठा आरोप लगाता है। वह पुलिस में रिपोट दर्ज करंवाता है और पुलिस को लेकर उसके घर पहुँचता है। उपमा पुलिस वाले के बोलने से पहले ही बिना झिझक के बोल पड़ी थी ''एस.पी.साहब पहले यह बताइये कि आपके कानून में बदचलन, जुल्म करने वाले शौहर के लिए क्या सजा है, दूसरे मैं हिन्दू नहीं हूँ एस.पी.साहब मैं मुसलमान हूँ देखिए मेरी बाँह पर गुदा हुआ, ये मेरे आ"ाक का नाम। '' उपमा अपने पति को थप्पड़ मारती है। वह केवल थप्पड़ मारकर ही विद्रोह नहीं करती बल्कि हिन्दू होते हुए भी अपने शक्की पति के साथ बदला लेने के लिए मुसलमान होने का दम भरती है।

शरद सिंह की 'मरद' कहानी की सुंदरा पारंपरिक स्त्री की छवि को तोड़ते हुए अपना नया रूप द"ार्ाती है। सुंदरा गांव की अनपढ और स्वाभिमानी नारी है। जब उसके साथ गाँव के सरपंच ने बलात्कार किया था तब उसकी सास और पति ने उसे ठाकुर से बदला नहीं लेने दिया था। तब से सुंदरा मे मन में प्रति"ोध की अग्नि जल रही थी। उसके बाद जब उसकी बेटी बड़ी हुई तो ठाकुर ने उस बेटी पर बुरी नजर रखना शुरू कर दिया। जब सुंदरा को ठाकुर की इस हरकत का पता चला जो वह भड़क उठी । उसका विद्रोही स्वर फूट पड़ा वह अपने पति को बोलती है कि ''तू बैठ के सोच। आ के देखे तो साला सरंपच, गाड़ दूँगी उसे खुडडी में..... ... अब मैं वो सुंदरा नहीं कि तरे कहे पे चुप बैठूँ, अब मैं माँ हूँ चमेली की, समझा। सुंदरा फिर दहाड़ी। उसकी विद्रोही भावना देखकर सास और पति चुप करके बैठ गए थे। लेखिका ने यहाँ यह स्पष्ट किया कि नारी कब तक पुरूष के गलत इरादों का ि"ाकार बनती रहेगी। आज उसमें जागृति आई है। वह कब तक अपने खिलाफ हो रहे शोषण को सहन करती रहेगी? आज वह अपने प्रति हो रहे अन्याय का बदला लेने के लिए अग्रसर हुई है। सुंदरा के अंदर दबा अतीत का दुख एक नया रूप धारण करता है जो उसके विद्रोही व्यक्तित्व को उजागर करता है।आज अनपढ़ निम्नवर्गीय नारी भी अपने अधिकारों के प्रति सजग हुई है। समाज में उसके प्रति हो रहे शोषण के विरूद्ध आवाज़ उठाती है। चित्रा मुद्गल की ''जब तक विमलाएँ हैं' कहानी के माध्यम से लेखिका ने एक विद्रोहिणी नारी का चरित्र प्रस्तुत किया है। विमला की बेटी के साथ जब बलात्कार होता है तो वह चुप नहीं बैठती है। उसके पति के मना करने पर भी वह बच्ची का इलाज अस्पताल में करवाती है। जिसके कारण उसे पति से बहुत मार खानी पड़ती है। वह उसे बोलता है मूर्ख औरत बच्ची को लेकर अस्पताल घूमती है। बिरादरी में मुझे मुँह दिखान लायक नहीं छोड़ा।

उसका पति पिता के फर्ज से पोछे हटकर अपनी झूठी इज्जत के लिए रोता है। तब वह अपने पति की बात का विद्रोह करती है ''उसने बेलिहाज़ पति की बात का विरोध किया । हल्दी चूने से ऐसे घाव नहीं भरते । टाँके डलाने न ले जाती तो क्या मासूम का जीवन बरबाद करती।'' वह पति के साथ की परवाह किए बिना बेटी को इंसाफ दिलाने के लिए लड़ती है और बेटी को इंसाफ दिलाती है। नीरजा माधव की ' तूफान आने वाला है ' कहानी में नारी के आधुनिक और नए रूप का चित्रण मिलता है सीमा एक क्राँतिकारी परिवर्तनवादी नारी है जो पुरूष द्वारा निर्मित समाज में पुरूष की श्रेष्ठता को तोड़ता है। सीमा जब छोटी थी तो उसने पिता को माँ पर अत्याचार करते देखा था जिसके कारण उसकी माँ मर गई थी । उसके बाद उसके बाप ने दूसरा विवाह कर लिया था। तब से उसके मन में पुरूष – सत्ता के प्रति विद्रोह भावना थी।

सीमा जब स्वयं माँ बनने वाली थी तब वह अपने मन में बैठे पुरूष के प्रति घृणा के भाव को व्यक्त करती है। वह अपने पति से कहती है, '' मत कहो बेटा। अपनी कोख से एक और पितृसत्ता को जन्म नहीं चाहती मैं । आज तक जिस धर्म की आड़ में हमारी जाति का शोषण होता रहा, मैं उसी धर्म की नींव पर कुठाराघात करूँगी । यह बच्ची मेरा हथियार होगी। '' सीमा का चरित्र पुरूष विरोधी है। वह पुरूष का साथ चाहती है। सत्ताधारी पुरूषों से वह नफरत करती है।

'पथद"ा ' कहानी में भी नीरजा जी ने नारी को धर्म–व्यवस्था के प्रति विद्रोह करते दिखाया है। छिपुनि का पति धर्म – परिवर्तन के चक्कर में फंसकर घर छोड़कर चला गया था। छिपुनि पति के वियोग में अपनी जिन्दगी काट रही थी लेकिन उसके मन में उन धर्म परिवर्तन करवाने वाले ढौंगियों के प्रति विद्रोही भावना थी।
एक बार जब उसके गाँव में साधु प्रवचन देने के लिए आया तो उसने साधु को भरी महफिल में आड़े हाथों लिया था । वह कहती हैं

'' साधु .....ऊँ .....फादरी बना है ..... दूसरों को धरम सिखाने आया है ..... ई करो .... ऊ करो ..... परभू कल्यान करेंगे, लग रहा था परभू से साक्षात्कार मिलकर आया है। ..... ढोंगी कहीं का ..... भगोड़ा ..... अपना दीन धरम बदलने आया है। सबके परिवार को डंसेगा ..... नाग की तरह।

कहानीकार ने छिपुनी के माध्यम से धर्म परिवर्तन करवाने वालों के प्रति विद्रोह को व्यक्त किया। वह धार्मिक व्यवस्था का विद्रोह करती है जो भोले भाले लोगों को बहला कर धर्म परिवर्तन करवाते हैं।

आज की स्त्री परम्परा का निर्वाह करने के लिए अपना बलिदान नहीं करना चाहती है। परम्परा की अपेक्षा उसे परिवार का मान–सम्मान ज्यादा महत्वपूर्ण लगता है। अगर उसके परिवार का काई अपमान करे तो वह उसके विरूद्ध आवाज उठाने से पीछे नहीं हटती ' मालती जो"ाी ' की कहानी 'निर्वासित कर दी तुमने मेरी प्रीत' में सुमिता

की शादी में बाराती उसके पिता का अपमान करते हैं । शादी उसके पिता ने एक योग्य परिवार म तय की थी। शादी वाले दिन बाराती उसके पिता का अपमान करते हैं। बाराती खाने की हर चीज में त्रुटि निकालते और उसके परिवार वालों को मजाक उड़ाते । यह सब सुमिता से बर्दा"त नहीं हुआ उसने पिता से बारात वापिस लौटाने के लिए कहा। उसके पिता ने उसे समझाया कि हर बाराती अपने आप को राजा समझता है और बेटी का बाप इन सब बातों को सुनता है लेकिन वह नहीं मानती थी । वह कहती हैं, ''नहीं बाबू जी, यह मरे लिए इतनी सी बात नहीं है। ऐसे संस्कारहीन परीवार में मेरा गुजार नहीं हो सकता । इससे तो मैं कुंआरी ही भली हूँ।'' वह अपने पिता जी की बेइज्जती का बदला बारात को वापिस लौटा कर लेती है। लेखिका ने स्पष्ट किया है कि आज की स्त्री स्वतंत्र विचारों वाली है। वह परम्परा से जुड़कर परिवार का अपमान होता नहीं देख सकती । इसलिए वह विद्रोह कर उठती है। विवाह उसके लिए अब कोई स्थाई बंधन नही है।

मैत्रेयी पुष्पा की 'आवारा न बन' कहानी की नीलू एक ि"क्षित लड़की थी । वह परिवार में पिता की दकियानूसी सोच के विरूद्ध थी। वह अपने जीवन को बंधन में नही रखना चाहती इसलिए वह घर से भाग जाती हैं। एक बार उसे कॉलेज में लड़के ने छेड़ा ता उसने पुलिस में रिपोट दर्ज करवाई वहाँ पर सिपाही ने उसका मजाक उड़ाया था, ''ए क्या नाम है तेरा नीलू : सुन तू ज्यादा आवारा न बन तू लड़की है, कब तक इनसे बचेगी? आज तो लड़के से माफी मंगवा देंगे, आईदा , खुद को कंट्रोल करे रखना । अरे लड़के तो छेड़ते ही हैं कृष्ण भगवान तक छेडते थे गोपियों को । तू गुंडागिरी करेगी? बदमा"ा।'' नीलू के मन में उसकी बात सुनकर ठेस पहुँची थी। तब से उसके मन में बदले की भावना उमड़ रही थी। जब वह पुलिस में भर्ती हुई तो वह उसी सिपाही से मिली जो उसे आवारा बोलता है। वह उसे कहती हैं, ''तुमने कहा था कि तेरी जैसी लड़कियाँ बदमा"ा होती है मैंने सोचा क्यों न बदमा"ा महकमें मे जाऊँ।'' लेखिका ने इसमें साहसी लड़की की मानसिकता को व्यक्त किया है। आज की नारी अपने प्रति हो रहे शोषण के विरूद्ध आवाज उठाती है। नीलू पुरूष की नारी के प्रति घृणित दृष्टि का विद्रोह करती है।

दांपत्य–जीवन की एकरसता से ऊबी हुई युवती की मनोद"ाा तथा मुक्ति की छटपटाहट का सूक्ष्म अंकन लेखिका रि"म कुमार ने 'कुछ पल अपने' कहानी में किया है। आज की नारी हर क्षेत्र में पुरूष की बराबरी कर चुकी है, फिर भी उसे पति के अनु"ाासन में रहना पड़ता है, इसलिए वह घुटन महसूस करती है और अवसर मिलते ही अपनी नितांत वैयक्तिक जिंदगी बिताने का प्रयास करती है। विमला पूरा दिन परिवार के कार्यों में व्यस्त रहती है। वह अपने लिए समय ही नहीं निकाल पाती।

एक दिन उसके पति को पता चल गया कि वह अपने घर से बाहर लड़कियों को सिलाई सिखाने गई थी। तो वह आग बबूला हो जाता है। जब वह घर आई तो उसे पति की जली–कटी बातें सुननी पड़ी थी। विमला ने पति को बातों का विरोध किया, ''क्यों नहीं जा सकती। पूरे चौबीस घटे सबका हुकुम बजाती हूँ। तुम सबसे उठने से पहले उठती हूँ। तुम सब के सोन के बाद सोती हूँ। तुम सबके सोने का खाने–पीने का अलग–अलग वक्त हैं, सिर्फ मेरा ही नहीं है। हर समय हर किसी की सेवा के लिए तत्पर रहती हूँ।..... यह चक्कर दिन –रात चलता है। मेरा सारा वक्त तुम लोगों का है, चौबीस घंटे में से क्या थोड़ा–सा वक्त नहीं निकाल सकती, अपने लिए, दो घंटे भी मेरे अपने नहीं है बोलो।''

कहानी की नारी स्वतंत्र और आधुनिक विचारों वाली युवती हैं, जिसमें गहरी अस्तित्व चेतना का बोध है। परम्परा और संतुलित दाम्पत्य जीवन की घुटन से मुक्त होकर वह स्व–व्यक्तित्व को पाना चाहती है। उसका व्यवहार उसके विद्रोह को मुखर करता है।

लेखिका जया जादवानी की कहानी 'परिदृ"य' की माधवी अपने पति के तानों से तंग थी। उसका पति हमे"ाा ही उसका निरादर करता। माधवी पहले तो आद"ार्ा पत्नी की तरह सब कुछ सहन करती रही लेकिन बाद में वह अपने परम्परावादी स्वच्छंदतावादी शक्की पति का विरोध करती है। जब उसका पति उसे पढ़ने के लिए रोकने लगा। वह कहती है, ''पढ़ना जरूरी है तुम ही कहते हो न कम पढ़ी–लिखी बीवियाँ बोर होती है। समाज में उनसे इज्जत भी नहीं बढ़ती। बीबी हो तो मिसेज चोपड़ा जैसी हो, जो नैनीताल में मि. चोपड़ा के बगैर एक महीना रह आई या मिसेज कुन्दन जैसी जो पार्टी में हर पुरूष के साथ खूब नाचती है।'' आज वह अपने आप को उनके अनुसार बदलने लगी तो उससे यह भी बर्दा"ात नहीं होता। वह कहती है,'' मैं घर छोड़कर जा रही हूँ। .... एक बात कहूँ जीती हुई औरत कभी घर नहीं लौट सकती। हमारे समाज में घर एक राहत की साँस लेने की जगह नहीं जाने कितनी दुविधाओं मु"किलों, चिंताओं, परे"ाानियों, कुंठाओं का अजायबघर है। यह पाँव की ऐसी बेड़ी है, जिसके एक बार टूटने के बाद कोई वापिस नहीं आना चाहेगा। यहाँ सिर्फ हारो हुई औरतें पनाह लेती हैं क्योंकि फिर वह इसके सिवा कहाँ जायेंगी?''

निष्कर्ष

इन कहानियों के आधार पर कहा जा सकता है कि भारतीय समाज में परम्परा से चली आ रही रूढिवादिता तथा पुरुष मानसिकता के विरोद्ध में नारी आज अपने अस्तित्व के लिए जागरूक हो चुकी है। आज की नारी पति के व्यक्तित्व मे पूर्ण विलीन नही होना चाहती है। वह अपनी अलग पहचान चाहती है। इसके लिए वह निरन्तर पुरूष प्रधान समाज में अपना स्थान बनाने के लिए संघर्षरत है। इसी प्रयास में शोषित समाज की सरंचनाओं और संस्थाओं से निरन्तर विद्रोह का रूप अपनाए हुए है। विवेच्य कहानियों में नारी के विद्रोही जीवन से झलकता है कि आज की नारी कब तक रूढ़ियों, परम्पराओं से लड़ती रहेगी। जब भी उसे कुछ गलत दिखाई देता है तो वह उसका विरोध करती है। उसे जहाँ पर भी ठेस लगती है वहाँ पर उसकी विद्रोह भावना झलकती है। अन्याय, अत्याचार और अत्यधिक बंधनों ने उसे विद्रोही बना दिया है।

सन्दर्भ गन्थ सूची

1. अंसल कुसुम, गुम होती गौरेया, रेमाघन पब्लिके"ानस, नई दिल्ली 2008.
2. कुमार रि"म, कुछ पल अपन, वाणी प्रका"ान, नई दिल्ली 2000.

3. चतुर्वेदी जगदी"ा, स्त्रीवादी साहित्यिक विम"र्ा, वाणी प्रका"ान, नई दिल्ली 2000.
4. जादवानी जया, अंदर के पानियों में कोई सपना कांपता है, वाणी प्रका"ान, नई दिल्ली 2002.
5. जो"ाी मालती, औरत एक रात है, परमे"वरी प्रका"ान, नई दिल्ली 2009.
6. पुष्पा मैत्रयी, पियरी का सपना, ने"ानल पब्लि"िंग हाऊस, नई दिल्ली 2009.
7. माधव नीरजा, पथद"ा, भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली 2003.
8. मुदगल चित्रा, लपटें, राजकमल प्रका"ान, नई दिल्ली 2002.
9. सिंह शरद, तीली तीली आग, सुनील साहित्य सदन, नई दिल्ली 2010.